Public Debt and its types
सार्वजनिक ऋण एवं इसके प्रकार

वर्तमान समय में लोककल्याणकारी राज्यों के विकास के कारण सरकारी कार्यों की मात्रा में उत्तरोत्तर वृद्धि होती जाती है जिसे पूरा करने के लिए सरकार खर्चे की लिए व्यवस्था करती है। लेकिन इन कार्यों की पूर्ति जब सरकारी आय से नहीं होता तो सरकार को ऋण लेना पड़ता है जिसे सार्वजनिक ऋण कहते है।

सार्वजनिक ऋण की विभिन्न किस्में निम्नलिखित है—

1. **आन्तरिक एवं बाह्य ऋण (Internal and External debt)**

आन्तरिक ऋण वे ऋण होते है जो देश के अन्दर देश के नागरिकों, बैंकों तथा अन्य संस्थाओं से प्राप्त किये जाते है।

जबकि बाह्य ऋण विदेशी सरकारों विदेशी व्यक्तियों, अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं से प्राप्त किये जाते है।

2. **उत्पादक तथा अनुत्पादक ऋण — (Productive and un-productive Debt)**

उत्पादक ऋण उन ऋणों को कहते है जिनका उपयोग ऐसी परियोजनाओं में किया जाता है जिनसे आय प्राप्त होती है जैसे कि रेलवे, बिजली, सिंचाई की योजनाएं।

अनुत्पादक ऋण उन ऋणों को कहते है जो ऐसी परियोजनाओं में लगाये जाते है जिनसे आय प्राप्त नहीं होती जैसे युद्ध, बाढ़ बेरोजगारी भत्ता, वृद्धावस्था पेन्शन आदि।

3. शोध्य तथा अशोध्य ऋण
(Redeemable and Irredeemable Debt)

शोध्य ऋण उन ऋणों को कहते है जिनके जो सरकार यह वायदा करती है कि वह उन्हें एक निश्चित तिथि पर ब्याज सहित अदा कर देगी। शोध्य ऋणों को अल्पकालीन, मध्यकालीन तथा दीर्घकालीन ऋणों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। अल्पकालीन ऋण 3 से 9 माह की अवधि के बीच परिपक्व हो जाते है जैसे- राजकोष पत्र (Treasury bills) मध्यकालीन ऋण पाँच वर्ष बाद परिपक्व होते है और दीर्घकालीन ऋण वे है जिनका भुगतान 10 से 15 वर्षों के बीच होती है। इसपर ब्याज दर ऊँची होती है।

अशोध्य ऋण वह होता है जिसे सरकार लेती है किन्तु वापस करने का कोई वायदा नही करती है। अशोध्य सार्वजनिक ऋण पर सरकार नियमित रूप से ब्याज अदा करती है किन्तु मूलधन वापस नही करती इसलिए Irredeemable Public debt को Perpendicular Public debt भी कहा जाता है।

4. निधिजन्य तथा अनिधिजन्य ऋण
(Funded and unfunded Debt)

निधिजन्य ऋण दीर्घकालीन ऋण होते है। इन ऋणों की अदायगी या तो कम से कम एक वर्ष बाद की जा सकती है अथवा यह भी हो सकता है कि इस सम्बन्ध में बिल्कुल ही वायदा न किया जाय।

जबकि अनिधिजन्य ऋण वे ऋण

होते है जिनका भुगतान एक वर्ष के अन्दर कर दिया जाता है। राजकोषीय बांड (Treasury bonds) अल्पकालिक ऋण होते है। क्योंकि ये तीन या छः माह के लिए लिए जाते है।

5. ऐच्छिक और अनिवार्य ऋण
(Voluntary and Compulsory debt)

सरकारी ऋण सामान्यतः ऐच्छिक प्रकृति के होते है। बिना किसी दबाव के या बिना किसी प्रयत्न के जो ऋण सरकार को मिल जाते है उन्हें ऐच्छिक ऋण कहा जाता है।

जबकि अनिवार्य ऋण दबाव से वसूल किये जाते है। जब सरकार को ऋणों की आवश्यकता होती है और उसे आसानी से ऋण प्राप्त नहीं होता तो सरकार दबाव डालकर ऋण वसूल करने का प्रयत्न करती है। सरकार ऐसा भी तभी करती है जब उसके सामने राष्ट्रीय संकट होता है। आमतौर पर अनिवार्य सार्वजनिक ऋण पर ब्याज तुलनात्मक रूप में अधिक रहता है इसलिए ऐच्छिक सार्वजनिक ऋण मिलना सरल होता है।

6. ब्याज सहित और ब्याज रहित ऋण
(With Interest and Without Interest debt)

ब्याज सहित ऋणों पर सरकार निश्चित अवधि के पश्चात, ऋणदाताओं को निश्चित अवधि के पश्चात ऋणदाताओं को निश्चित दर से ब्याज देती है जबकि ब्याज रहित ऋणों पर सरकार को कोई

ब्याज नहीं देना पड़ता । आज कोई भी सरकार बिना ब्याज के ऋण नहीं लेती है प्राचीन काल शासकों के द्वारा बिना ब्याज का ऋण लिया जाता

7. क्रय योग्य व अक्रय योग्य ऋण
(Perchasable and Non-Perchasable Debt)

क्रय योग्य ऋण वे ऋण है जिनके ऋण पत्र खुले बाजार में खरीदे व बेचे जाते है जैसे सरकारी प्रतिभूतियाँ । अक्रय योग्य ऋण वे होते है जिन्हे खुले बाजार में खरीदा या बेचा नही जा सकता है। परन्तु पुननिर्धारित दरों पर केवल सरकार के हाथ ही बेचा जा सकता है जैसे - डाकखाने का बचत पत्र ऋण पत्र ।

8. कुल ऋण एवं शुद्ध ऋण
(Total debt and Net debt)

किसी भी समय विशेष पर सरकार के जितने ऋण होते है उन सबके योग को कुल ऋण कहा जाता है। कुल ऋण में से ऋण शोधन के लिए कोष में जमा की गयी राशि को घटा देने के बाद जो शेष बचता है उसे शुद्ध ऋण कहा जाता है।

9. अल्पकालीन व दीर्घकालीन ऋण
(short term and Long term Debt)

जब सरकार अल्प काल के लिए ऋण लेती है तो उसे अल्पकालीन ऋण कहते है। इन ऋणों को एक वर्ष की अवधि में वापस कर दिया जाता है

जब सरकार ~~दीर्घ~~ काल लम्बे समय के लिए ऋण लेती है उसे दीर्घकालीन ऋण कहते हैं। इसे लौटाने का कोई समय निश्चित नहीं होता है लेकिन जबतक ऋण का भुगतान नहीं किया जाता तबतक ऋणदाता को ब्याज मिलता रहता है।

इसप्रकार J.K. Mehta का कहना है कि "सार्वजनिक ऋण एक इकाई है" क्योंकि इनका आधार अलग भिन्न होता है क्योंकि इनके बीच अन्तर बाजार, अलग होता है। ब्याज, ऋण चुकाने के ढंग, आदि के ~~[illegible]~~ कारण होता है।

———x———

Dr Sandhya Rani
Dept of Economics
Maharaja College